(1)

राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक : 9] दसवीं विधान सभा के नवें सत्र का तीसरा दिवस [संख्या : 3

बुधवार,

10 सितम्बर, 1997

राजस्थान विधान सभा की बैठक 11.00 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री शांतिलाल चपलोत, अध्यक्ष, पदासीन)

शोकाभिव्यक्ति

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल, सदस्य, राज्य सभा एवं पूर्व विधायक, राजस्थान विधान सभा के निधन पर।

श्री अध्यक्ष : शोकाभिव्यक्ति।

श्री भैरोंसिंह शेखावत (मुख्य मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, इस सदन को इस बात की सूचना देने में मुझे बहुत ही दुःख हो रहा है कि इस सदन के बहुत ही प्रतिष्ठित सदस्य, मेरे पुराने साथी श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल का आज स्वर्गवास हो गया।

अध्यक्ष महोदय, इस विधान सभा में 1957 में उन्होंने विधायक के रूप में प्रवेश किया था। विधान सभा में अपनी वाक-शक्ति, चातुर्य और विधि-विधान के ज्ञान के अनुसार उन्होंने जनता का प्रतिनिधित्व कर एक अमिट छाप यहां पर छोड़ी थी।

प्रारम्भ से ही वह राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सदस्य रहे, प्रचारक रहे और उसके बाद राजनीति में प्रवेश कर पहली बार 1957 का चुनाव जीता तथा लगातार कई वर्षों तक राजस्थान विधान सभा के सदस्य रहे। उसके बाद लोकसभा के सदस्य हुए, केन्द्रीय सरकार में राज्य मंत्री के रूप में उन्होंने कार्य किया और यह पहला अवसर था जो उनको मिला कि राज्य मंत्री के रूप में उन्होंने केन्द्रीय सरकार के बजट प्रस्तुत होने के बाद बजट की सारी डिबेट का उत्तर दिया, उसके बाद राज्यसभा के सदस्य बने।

वे राजस्थान की बार एसोसिएशन के एक अच्छे एडवोकेट थे। कई मामलों में उन्होंने एडवोकेसी के द्वारा ख्याति प्राप्त की है। वह एक अच्छे स्पोर्ट्समैन भी थे। राजस्थान विधान सभा के सदस्यों के क्लब के वे सदस्य भी रहे और कई वर्षों तक उस क्लब की उन्होंने व्यवस्था की।

एक बहुत ही हंसमुख और जीवंत व्यक्तित्व के धनी थे। अचानक उनके हार्ट की बीमारी हुई और अभी थोड़ी देर पहले उनका देहावसान हो गया।

मैं और सतीशचन्द्र अग्रवाल 1957 से लेकर 1967 तक इस विधान सभा के

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

सदस्य रहे और 1967 से 72 तक हम सदस्य रहे। मैं ऐसा समझता हूं कि विधान सभा में आने के बाद जिस विषय पर बोलना हो उसकी कितनी तैयारी की जाए. तैयारी के बिना विधान सभा में बोलना उचित नहीं है, यह उस व्यक्ति का एक प्रकार से आदर्श रहा है। जब भी वह विधान सभा में आते थे कानून की कई किताबें उनके साथ होती थीं और कानून के आधार पर उन्होंने इस विधान सभा में कई बार पाइन्ट आफ आर्डर रेज किये। उन पाइन्ट आफ आर्डर पर स्पीकर द्वारा जो फैसले हुए वह हिन्दुस्तान के पार्लियामेंटरी अफेयर्स में हिन्दुस्तान के प्रिविलेजेज के और पाइन्ट आफ आर्डर के जो बुलेटिन निकले हैं उनमें उनका उल्लेख किया गया है। आज भी आप विधान सभा की प्रोसिडिंग्स उठाकर देखेंगे तो सतीशचन्द्र अग्रवाल द्वारा रेज किये गये पाइन्ट आफ आर्डर आसानी से निरस्त नहीं किये गये, बल्कि उन्हें स्वीकार किया गया।

इस प्रकार का एक व्यक्तित्व अचानक हमारे बीच से उठ जाए, निश्चित रूप से यह हमारे सबके लिए बहुत ही दुःख का विषय है। मैं भगवान से प्रार्थना करूंगा कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और उनके शोक संतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी श्रद्धांजलि, अपनी तरफ से, अपनी पार्टी की ओर से और सदन की ओर से प्रस्तुत करता हूं।

श्री खेलसिंह राठौड़ (शेरगढ़) : अध्यक्ष महोदय, आज जब हम आपके चैम्बर में हाजिर हुए तो मालूम हुआ कि सतीशचन्द्र जी अग्रवाल का स्वर्गवास हो गया। यह बहुत ही दुखद घटना हुई।

सतीशजी असेम्बली के मैम्बर थे और उनके साथ बैठने का हमें भी मौका मिला। वे अपोजिशन में थे उन दिनों में हम पार्टी-इन-पावर में थे, लेकिन जिस तैयारी के साथ में सतीशजी आते थे, एक-एक बिन्दु पर जिस महत्व से और जो उनकी नालेज थी उसको देखते हुए वे हमारी इस असेम्बली के गिने-चुने, बहुत ही अच्छा बोलने वालों में से एक थे।

जैसा कि अभी नेता महोदय कह रहे थे कि उनका कंट्रीब्यूशन असेम्बली में बहुत ज्यादा रहा, इसमें कोई शक नहीं, पाइन्ट आफ आर्डर का ही सवाल नहीं, सतीशजी ने यहां पर डिबेट्स में जब कभी भाग लिया, खास तौर से बजट के ऊपर जिस गहराई से सतीश जी बोला करते थे उस महत्व के अन्य बहुत ही कम लोग थे इस असेम्बली में।

सतीशजी की भाषा बहुत अच्छी थी। हिन्दी के अन्दर बहुत अच्छा बोल लेते थे, अंग्रेजी की नालेज भी उनकी बहुत अच्छी थी। हर पाइन्ट पर बहुत विस्तार से और बहुत अच्छा वक्ता थे। अच्छे पार्लियामेंटेरियन थे। उनके स्वर्गवास से निश्चित तौर पर बहुत क्षति हुई है।

(3)

(श्री खेतसिंह राठौड़)

जैसा कि अभी सदन के नेता महोदय बतला रहे थे, यहां के बाद में सतीशचन्द्र जी पार्लियामेंट के मेम्बर भी रहे। वहां पर उनको वित्त विभाग सौंपा गया। वहां पर भी उन्होंने अपनी काबलियत का इजहार किया। इसमें कोई शक नहीं, वह बहुत अच्छे पार्लियामेंटेरियन थे, भारतीय जनता पार्टी के, राजस्थान के उच्च कोटि के नेता थे। उनके स्वर्गवास से निश्चित तौर पर बहुत भारी क्षति हुई है।

मैं अपनी ओर से, अपने दल की ओर से और सभी की ओर से भगवान से यही प्रार्थना करता हूं कि सतीश जी का यह जो असामयिक निधन हुआ है, उनकी आत्मा को भगवान शांति दे और उनके शोक-संतप्त परिवार को यह हिम्मत दे कि वह इस शोक को झेल सकें।

श्री फतेहसिंह (नेता, जनता दल) : अध्यक्ष महोदय, आज बड़े दुःख की बात है कि इसी विधान सभा के सदस्य रहे सतीशचन्द्र अग्रवाल, कई बार विधान सभा में उन्होंने अपने विचार रखें, अच्छे काम भी किये, आज हमारे बीच से चले गये हैं। मैं उनके प्रति अपनी यही भावना व्यक्त करता हूं कि जिस तरह से उन्होंने बाहर और विधान सभा के अन्दर अपनी सेवाएं दी हैं और आज हमारे बीच में नहीं हैं तो हम यही कामना करते हैं कि उनके जो रास्ते हैं, जो उनकी शैली है व जो उनके कार्यक्रम हैं उनको अपनाएं।

उनके निधन के मौके पर मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को भगवान शांति दे और उनके परिजनों को भगवान दुःख सहने की शक्ति प्रदान करे।

श्री अमराराम (नेता, माकपा) : अध्यक्ष महोदय, सतीशचन्द्र अग्रवाल जो इस सदन के सदस्य और पार्लियामेंट के मेम्बर भी रहे, मंत्री भी रहे, उनके असामयिक निधन पर जो शोक प्रस्ताव रखा है उसमें मैं अपने आपको शामिल करता हूं।

उन्होंने अपने इस सार्वजनिक जीवन में जनता की आवाज प्रखरता से उठाई है। निश्चित रूप से समाज को आगे बढ़ाने में उनका योगदान रहा है। आज वे हमारे बीच में नहीं रहे हैं। मैं प्रकृति से यही कामना करूंगा कि शोक-संतप्त परिवार को इस असामयिक निधन पर जो दुःख हुआ है उसको झेलने के लिए शक्ति दे। मैं उनको अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री शिवनाथ सिंह (गुढ़ा) : अध्यक्ष जी, आज सुबह विधान सभा में आते ही यह दुखद समाचार मिला कि सतीश जी नहीं रहे, मन को काफी दुःख हुआ।

श्री सतीश जी और हम कई साथी 1957 में साथ-साथ इस विधान सभा में आये। मुझे पूरा याद है, सतीश जी इधर बैठते थे। एक प्रखर वक्ता थे और कानून के ज्ञाता थे। जो भी सवाल वह यहां उठाते थे उस सवाल के पीछे एक कानूनी वजन होता था। जैसा सदन के नेता महोदय ने कहा, हर बात पर वह कानून के हिसाब से पूरी तैयारी करके यहां आते थे।

(श्री शिवनाथ सिंह)

सतीश जी दिल्ली में भी गये और वहां मंत्री पद पर आसीन रहे। उन्होंने राज्य वित्त मंत्री के रूप में अपनी एक छाप छोड़ी और बहुत से ऐसे मामले थे जिनको उन्होंने सुलझाया। अभी-अभी जब पिछला सत्र हो रहा था तो बजट के सम्बन्ध में कुछ आपत्तियां उन्होंने उठायीं और उनकी आपत्तियां मानी गयीं। मेरा कहने का मतलब यह है कि वह एक विद्वान थे, प्रखर वक्ता थे और अपनी बात को बड़ी संजीदगी से रखते थे। इस प्रकार के साथी, जो हमारे बीच से उठकर चले गये, मन को पीड़ा देता है।

भगवान से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और उनके शोक संतप्त परिवार को यह दुःख सहन करने की शक्ति दे। हम सब उनको अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्री हरिशंकर भाभड़ा (उप मुख्य मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, आज के इस दुःखद समाचार से न केवल राजस्थान को बल्कि देश को एक बहुत बड़ी क्षति हुई है।

सतीश जी से मेरा सम्बन्ध सन् 1945 से लगातार रहा है। छोटी अवस्था से ही उन्होंने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में कार्य किया और यहां तक कि पूरा जीवन देकर, उसके वह प्रचारक भी रहे, कई वर्षों तक प्रचारक के नाते उन्होंने काम किया। राजस्थान में भिन्न-भिन्न स्थानों पर प्रवास कर सामाजिक कार्य, सांस्कृतिक कार्य बड़ी लगन के साथ में किया।

राजनीति में आने के बाद और व्यक्तिगत जीवन में भी वह एक सफल एडवोकेट थे। बार में भी उनकी कार्यपटुता की छाप थी। वे जनसंघ के अध्यक्ष भी रहे। पूरे राजस्थान में उन्होंने जनसंघ के अध्यक्ष के नाते प्रवास भी किया और जनसंघ को आगे बढ़ाने में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा। विधान सभा में उनकी गतिविधियों की खबरें अखबारों में छपती थीं। कोई दिन ऐसा नहीं जाता था जिसमें सतीशचन्द्र जी अग्रवाल किसी न किसी विषय पर विधान सभा में अपनी छाप नहीं छोड़ते थे। उस समय भैरोंसिंह जी और सतीश जी की जोड़ी पूरे राजस्थान में जोड़ी के नाते प्रसिद्ध थी। इस तरह से विधान सभा में जो भी योगदान विपक्ष में रहकर उन्होंने किया वह भी एक अभूतपूर्व था।

जब वे केन्द्र में मंत्री थे तो मैं भी राज्य सभा का सदस्य था। मुझे अच्छी तरह से मालूम है कि चौधरी चरणसिंह जी वित्त मंत्री थे, मेरे सामने चौधरी जी ने एक बार उनसे कहा कि यह वित्त का मामला मेरे बस का नहीं है इसलिए यह आपको ही सम्भालना पड़ेगा और यही कारण था कि जितनी भी इम्पार्टेण्ट डिबेट्स बजट पर होती थीं, सारी का जवाब चौधरी चरण सिंह जी उन्हीं को देने के लिए प्रेरित करते थे। बजट का जवाब भी वही देते थे।

जहां तक वित्तीय विषय का प्रश्न है, इसमें उनका बड़ा भारी योगदान स्टेट मंत्री रहते हुए भी हुआ था और उस समय राजस्थान के अनेक वर्गों का जिस प्रकार से उन्होंने हित संरक्षण किया, यह कालोकरा

(श्री हरिशंकर भाभड़ा)

और पाली, सब जगह जो हैंड प्रिंटिंग का काम चालू हुआ, उस समय यह बहुत भारी समस्या थी कि इनको काम्पीटिशन हैण्डलूम से करना पड़ता था और ये पिछड़े हुए थे, सतीश जी ने ही प्रयास करके एक्साइज ड्यूटी इनकी कम की और इस तरह से हमारे यहां जो हैण्ड प्रिंटिंग का काम राजस्थान में फैला, उसमें उनका बहुत बड़ा योगदान रहा।

उम्र तो उनकी और हमारी एक ही है। एक ही साल का जन्म है हमारा और उनका। इसलिए कोई बहुत ज्यादा उम्र नहीं थी लेकिन दुर्भाग्य से हार्ट की बीमारी हुई। बाई-पास सर्जरी उन्होंने भी करवाई और मैंने भी करवाई लेकिन एक दुखद संयोग की बात है कि हमें कल्पना भी नहीं थी कि वह इस तरह से हमें बीच में छोड़कर चले जाएंगे। आज सुबह अचानक यह खबर मिली और इससे मन को बड़ा धक्का लगा। पर कभी-कभी यह भी लगता है कि हम यहां जब बोलते हैं और पता नहीं क्या सोचते हैं कि हम क्या कर देंगे लेकिन जब मृत्यु आती है तो आदमी बेसहारा हो जाता है और असली आदमी की औकात मौत पर ही पता चलती है। हम कितनी भी बड़ी-बड़ी बात करें लेकिन मौत के सामने सब को पराजित होना पड़ता है। इसलिए आज यह जो घटना घटी, सतीश जी का देहान्त हुआ, यह देश के लिए भी क्षति है। भारतीय जनता पार्टी में भी जितनी भी वित्तीय, इकानामिक अफेयर्स पर समितियां बनी हुई हैं, उनके संयोजक अभी भी वही थे। भारतीय जनता पार्टी की आर्थिक नीतियों को बनाने में उनका सदैव योगदान रहा और अखिल भारतवर्षीय स्तर पर भी उन्होंने समय-समय पर भारतीय जनता पार्टी की आर्थिक नीतियों को सजाने में, संवारने में अपना बहुत योगदान दिया।

इस प्रकार के व्यक्तित्व का हमारा साथ छोड़कर चले जाना हमारे लिए बहुत ही दुःखद है। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और उनके परिवार को इस कष्ट को सहने की शक्ति दे।

श्री परसराम मदेरणा (नेता, प्रतिपक्ष): माननीय अध्यक्ष महोदय, यह दुःखद और पीड़ादायक समाचार, अकस्मात् हृदय गति रुक जाने से सम्माननीय सतीशचन्द्र जी अग्रवाल का देहान्त हो गया, मुझे यहीं मालूम हुआ है।

वे तीन दफा विधान सभा के सदस्य रहे तो मैं भी इस सदन का सदस्य रहा। वह एक उच्च कोटि के पार्लियामेंटेरियन थे। कुछ ऐसे मुद्दे आये हैं इस सदन के अन्दर जब किसी व्यक्ति ने प्रथम बार सदन में शायद उठाये होंगे। आर्डिनेंस के अन्दर जो कांस्टीट्यूशनल रिजोल्यूशन आता है, यह सबसे पहले 1962 में इन्होंने ही उठाया था। पूर्व में दो विधान सभा के कार्यकाल में किसी को पता नहीं था कि यह आर्डिनेंस रिजेक्ट भी किया जा सकता है। मेरा वहां पर उन्होंने इम्तिहान भी लिया था, मुझे आज भी वह याद है।

वह हाई-कोर्ट के बहुत अच्छे एडवोकेट थे। विधि का उनको सम्पूर्ण ज्ञान था और

(श्री परसराम मदेरणा)

उसके आधार पर इस सदन में जो भी विधेयक आते थे उनमें हर क्लॉज के ऊपर वह बहुत ही विस्तार से अपना विचार रखते थे। मुझे आज याद है, मैं नहीं समझता कि कोई भी इस विधान सभा का सदस्य किसी भी बिल के विचारार्थ लिये जाने पर उसके पारण होने के पूर्व सदन में जब बहस चल रही है, कोई विधान सभा का सदस्य हाईकोर्ट की रूलिंग लेकर सदन में आता हो। इसलिए हमेशा हमको टोज पर रहना पड़ता था और मैं भी रूलिंग लेकर आता था, लॉ डिपार्टमेंट से पूछ कर के कि इसमें सतीशचन्द्र जी अग्रवाल निश्चित रूप से रूलिंग लायेंगे। मेरी और उनकी तो, दोनों तरफ से ही कई दफा रूलिंग की किताबें खुलती थीं जैसे किसी कोर्ट के अंदर बहस हो रही है, उस तरह। हमेशा सतर्क रहना पड़ता था ट्रेजरी बैंचेज को उनके विधि के ज्ञान के फलस्वरूप।

पूर्व में जब कभी यहां पर चर्चा होती थी तो बहुत विस्तार से उन्होंने एक अपनी छाप छोड़ी इस विधान सभा में। उसके साथ ही सार्वजनिक समस्याओं को लेकर ऐसा कोई दिन नहीं था जिस दिन सतीश चन्द्रजी अग्रवाल इस सदन के अन्दर अपने विचार व्यक्त नहीं करते हों। बहुत प्रभावशाली वक्ता थे।

वे लोक सभा के भी सदस्य रहे, विधान सभा के भी सदस्य रहे तीन बार। लोक सभा के अन्दर भी, जब वे स्टेट फाइनेंस मिनिस्टर थे, मैं उनसे मिलने के लिए उनके घर पर गया, केवल कर्टसी काल।

एक दफा मैं राज्य सभा में गैलेरी में बैठा हुआ था। उनको मैंने स्टेट मिनिस्टर की हैसियत से कुछ क्वेश्चन का रिप्लाई देते हुए सुना था एक एडजोर्नमेंट मोशन पर। हिन्दी और अंग्रेजी भाषा, दोनों पर बराबर अभिव्यक्ति की उनकी मोनोपोली थी।

यह बहुत दुःखद समाचार है, अध्यक्ष महोदय, कि राजस्थान के सार्वजनिक जीवन में इतना महत्वपूर्ण स्थान रखने वाला व्यक्ति नहीं रहा। निश्चित रूप से इस राज्य के विकास में, इस विधान सभा में परम्पराएं स्थापित करने में और इस राज्य के अन्दर संसदीय लोकतंत्र को मजबूत करने में, प्रगाढ़ बनाने में और उसमें अच्छी परम्पराएं स्थापित करने में और राष्ट्रवादी भी, उन्होंने अपना एक स्थान पाया है।

अभी जब वे राज्य सभा के सदस्य नहीं भी थे तो भी राष्ट्र के इम्पार्टेन्ट वित्तीय मुद्दे, जब कभी भी चर्चा में आये हैं उस पर उन्होंने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी। उन्होंने फाइनेंसेज पर गहरा अध्ययन कर लिया था भारत की अर्थ नीति, भारत के फाइनेंसेज को समझना और उसमे अधिकारपूर्वक कुछ बातें कहना, यह बहुत बड़े ज्ञान की आवश्यकता है और वह ज्ञान उन्होंने अपनी मेहनत से अध्ययन से अर्जित किया था।

मैं अवाक रह गया, जब मैंने यह सुना आज। मुझे बहुत पीड़ा और दुःख है। इस सार्वजनिक जीवन में बहुत बड़ी क्षति हुई है जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में मुझे सम्भव प्रतीत नहीं होती। मनुष्य एक दिन में नहीं बनता। कई वर्षों के

(श्री परशुराम मदेरणा)

बाद में आदमी एक स्टेटस, एक जगह पर पहुंचता है। वे अब हमारे बीच में नहीं रहे। वे इस सदन के सदस्य रहे हैं। उसके बाद में मुझे कभी कभार मिलने का मौका मिला था और बड़ी सहृदयता से, प्रेम से बहुत सी बातें हुई थीं कई दफा में। एक सामाजिक फंक्शन में मैं उनसे मिला।

अध्यक्ष महोदय, इससे राजस्थान की बहुत बड़ी क्षति समझता हूं और मेरे दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की गयी है लेकिन श्रद्धांजलि के विषय में अगर दुबारा श्रद्धांजलि भी मैं अर्पित करूं, मैं अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मेरे दल की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और परम पिता परमात्मा से सविनय हाथ जोड़कर अनुरोध करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और उनके परिवार को, इस दुःख को, इस बिछोह को और इस कमी को, जो क्षति हुई है, उसको सहन करने की शक्ति दे।

श्री कालीचरण सराफ (जौहरी बाजार) : माननीय अध्यक्ष महोदय, आधा घण्टा पूर्व जब यह समाचार मिला कि माननीय सतीश चन्द्र अग्रवाल नहीं रहे, यह समाचार सुनकर यकायक मुझे विश्वास नहीं हुआ क्योंकि आज से 4-5 दिन पहले ही मुझे उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था उस समय वे बिलकुल स्वस्थ और प्रसन्नचित्त नजर आ रहे थे।

माननीय सतीश चन्द्र जी अग्रवाल के देहावसान से हमारे प्रदेश ने एक महान् राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री, प्रखर वक्ता को दिया है। इसके साथ-साथ मेरे मार्गदर्शक के रूप में समय-समय पर उन्होंने जो मेरा मार्गदर्शक किया, इसके कारण मुझे व्यक्तिगत क्षति भी हुई है। वित्तीय मामलों में तो उनकी पारंगता से सभी लोग सहमत होंगे परन्तु उसके साथ-साथ किसी भी विषय के ऊपर कम न थे और मेरे प्रति तो उनका इतना व्यक्तिगत लगाव था, मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ कि उनके निर्वाचन क्षेत्र जहां से वे तीन बार विधायक रहे, वहां से प्रतिनिधित्व करने का मौका मिला। मैं जब भी किसी मामले में मार्गदर्शन लेने के लिए उनके पास गया तो उन्होंने बेहिचक अपना बच्चा समझकर मुझे हर मामले में मार्गदर्शन दिया।

उनके निधन से हमने एक महान् देशभक्त, राष्ट्रवादी विचारक, अर्थशास्त्री, संसदविज्ञ खोया है। निश्चित रूप से सारे प्रदेश को जो क्षति हुई है, वह अपूरणीय क्षति है। उसका भरा जाना असम्भव है।

मैं इस अवसर पर मेरी ओर से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार को इस हादसे को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। धन्यवाद।

श्रीमती उजला अरोड़ा (जयपुर ग्रामीण) : अध्यक्ष महोदय, माननीय सतीश जी के निधन का समाचार जब मैंने यहां आकर सुना, इस आकस्मिक घटना से गहरी वेदना हुई। भरतपुर से लेकर जयपुर तक और जयपुर में जनसंघ से लेकर भारतीय

(श्रीमती उजला अरोड़ा)

जनता पार्टी तक हमें उनका मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा। यही नहीं, 19 महीने जेल में थे। मीसा में जब 1975 से 1977 तक हम लोग बन्द थे, एक साथ रहने का मौका मिला। हमने अपना एक नेता प्रखर वक्ता, सशक्त अधिवक्ता और मार्गदर्शक इस निधन से खो दिया है। भगवान से प्रार्थना करती हूं कि उनकी आत्मा को शांति दे तथा उनके परिवार को और सब को यह आघात सहन करने की शक्ति दे।

श्री चन्दनमल बैद (तारानगर) : अध्यक्ष महोदय, आज अभी यह जानकर बहुत भारी दुःख हुआ कि हमारे बहुत निकट के मित्र, इस विधान सभा में बरसों तक साथ रहे हुए, जिनकी हमने आलोचना की, जिन्होंने हमारी जी भर करके आलोचना की, लेकिन सदन के बाहर निकल करके हम दोस्तों की तरह मिले, ऐसे एक्सीलेंट आदमी, पर जेंटलमेन, स्पष्ट वक्ता, ओजस्वी वक्ता, विद्वान, जानकार और ऐसे फ्लो से बोलने वाले कि कई बार रिपोर्टर्स यह कहते थे कि सतीश चन्द्रजी बोलते हैं तो हम से लिखा नहीं जाता, इतनी तेजी से और इतने स्पष्ट रूप से बोलने वाले थे, कमेटी में हम साथ थे, सबोर्डिनेट लेजिस्लेशन कमेटी में मैं चेयरमैन था, वह मैम्बर थे, हम दोनों आबू गये, एक महीने तक हम आबू रहे, आबू में मैंने एक महीने तक मीटिंग की, उनकी धर्मपत्नी भी साथ थीं, मेरी धर्मपत्नी भी साथ थीं, हमारा तो उनसे पारिवारिक सम्बन्ध था एक तरह से; जब भी कभी मिलते थे वह, तो दिल से दिल, हृदय से हृदय मिला कर मिलते थे, ऐसे शानदार आदमी के अचानक देहावसान की खबर जब सुनी मैंने, तो बहुत दुःख हुआ मुझे। मैं सोच रहा था कि जब बजट की सप्लीमेंट्री ग्रांट्स की बात होगी तब जाऊंगा मैं, कुछ काम, तैयारी कर रहा था, ज्यों ही मुझे माननीय सचिव महोदय ने यह सूचना दी, मैं भाग कर आया, मुझे बहुत दुःख हुआ, मैं हृदय से उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि इस महान् आत्मा को शांति प्रदान करे, उनके शोक-संतप्त परिवार को यह महान् दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

अभी थोड़े दिन पहले ही हमने पार्लियामेंट में उनके कई भाषण सुने थे, राज्य सभा में कितने एक्टिव थे वह। कभी सोच ही नहीं सकता था मैं कि ऐसे एक्टिव आदमी इस तरीके से चले जायेंगे। उनके चले जाने से सारे सदन को बहुत धक्का लगा है।

यही नहीं, मैंने कभी यह महसूस ही नहीं किया कि वह भारतीय जनता पार्टी के हैं। मैं तो ऐसा समझता था, जैसे हम में से एक हैं वह। एक हमारे इस विधान सभा के प्रोडक्ट हैं और इस विधान सभा के प्रोडक्ट के नाते उनकी दोस्ती, उनकी मित्रता और उनकी भलाई का हमेशा मैं कायल रहा हूं। मैं हृदय से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और फिर भगवान से एक बार प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति प्राप्त हो और उनके परिजनों को यह महान् दुःख सहन करने की शक्ति प्राप्त हो।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक) : माननीय अध्यक्ष महोदय, हम एक ऐसे नेता को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं जो न केवल राजनेता थे, एक अच्छे प्रशासक भी थे. जिन्होंने इस सदन में कई परम्पराएं कायम कीं। विधान सभा की जब प्रोसीडिंग्स पढ़ते हैं, जिस समय वह विधान सभा में थे, तो शायद विधान सभा की एक दिन की प्रोसीडिंग्स ऐसी नहीं होगी जिसमें सतीशजी ने अपना कोई न कोई इस प्रकार का विद्वतापूर्ण और उल्लेखनीय योगदान नहीं दिया हो। मैं तो ऐसा मानता हूं कि यदि हमको संसदीय परम्पराओं का ज्ञान प्राप्त करना है तो सतीशजी के भाषणों को केवल हम पढ़ लें, हमको कुछ संसदीय परम्पराओं का ज्ञान हो सकता है। उन्होंने इस प्रकार की यहां पर मर्यादाएं कायम कीं कि यदि विपक्ष में किसी बात पर बोलना हो तो उसमें कोई कंजूसी नहीं करते थे लेकिन व्यक्तिगत व्यवहार में कभी राजनीति इस प्रकार आड़े नहीं आने दी और यही कारण है कि आज उनके चले जाने से सब लोगों को जिस प्रकार का दुःख है।

जिस समय मैं एम. एल. ए. नहीं था, एक साधारण कार्यकर्ता के रूप में मुझे दिल्ली जाने का मौका मिला, जब वह वित्त राज्य मंत्री थे। उस समय कोई सैस, ड्यूटी राजस्थान के लोगों पर उन्होंने लगाई थी और एक्साइज के लोगों ने, कई लोगों को इस प्रकार की धमकियां दीं कि उनको जेल में डाल देंगे और उनके उसको बन्द कर देंगे, उस समय कुछ लोगों के साथ जाने का मौका मिला था। उन्होंने मामले को समझते ही सारे हिन्दुस्तान भर के आंकड़े मगवाये और जब यह देखा कि यह वास्तव में गलत है तो उसी समय उन्होंने पांच मिनट में, समझने में देर नहीं लगाई और फैसला ले लिया। यानि उनकी पकड़ इस प्रकार की थी, वह इस प्रकार के एक प्रशासक भी थे। अच्छे राजनीतिज्ञ भी थे, अच्छे मार्गदर्शक भी थे, अच्छे मित्र भी थे। जब हम संसदीय परम्पराओं के बारे में उनसे मिलने जाते थे तो बिलकुल अपना ही समझ कर, हम तो उनकी उम्र से बहुत छोटे हैं लेकिन कभी उन्होंने यह नहीं समझा कि मेरी और इनकी उम्र में या ज्ञान में इतना अन्तर है, मैं किस प्रकार बात करूं इतने स्नेह से वह समझाते थे, उसको हम भूल नहीं सकते।

मैं समझता हूं कि हमने एक इस प्रकार का नेता, एक इस प्रकार का प्रशासक और एक इस प्रकार का व्यक्तित्व खो दिया है जिसकी पूर्ति होना सम्भव नहीं है। मैं उनके व्यक्तित्व के बारे में कहते में अपने आपको बहुत छोटा पाता हूं और मेरे पास वह शब्द भी नहीं हैं।

मैं इन्हीं शब्दों के साथ ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को चिर शांति प्रदान करे और उनके परिजनों को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, शोकाभिव्यक्ति के इस अवसर पर इस सदन में माननीय सदन के नेता, प्रतिपक्ष के नेता, अन्य दलों के नेताओं एवं सदस्यों ने पूर्व मंत्री एवं वर्तमान सांसद श्री सतीश

(10)

(श्री अध्यक्ष)

चन्द्र अग्रवाल के प्रति जो शोक प्रस्ताव प्रस्तुत किया है व संवेदना व्यक्त की है उसमें मैं अपने आपको भारी दिल से सम्मिलित करता हूं।

पूर्व मंत्री एवं सांसद श्री सतीशचन्द्रजी अग्रवाल का जन्म 27 सितम्बर, 1928 को भरतपुर जिले के ग्राम थून में हुआ।

आपने बिड़ला कॉलेज–पिलानी, महाराजा कालेज–जयपुर एवं विधि महाविद्यालय से एम. कॉम., एलएल.बी. की उपाधियां प्राप्त कीं।

वरिष्ठ भारतीय जनता पार्टी के नेता श्री अग्रवालजी दूसरी, तीसरी एवं चौथी राजस्थान विधान सभा के जयपुर के जौहरी बाजार निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते थे। विधान सभा के कार्यकाल के दौरान आप याचिका समिति के सभापति रहे तथा लगभग 12 वर्ष तक सदन की सभापति तालिका के सदस्य भी रहे।

श्री अग्रवालजी छठी एवं सातवीं लोक सभा में जयपुर से सांसद रहे। छठी लोक सभा के कार्यकाल के दौरान आप वर्ष 1977 से 79 तक केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री रहे। सातवीं लोक सभा के कार्यकाल के दौरान आप लोक सभा की लोक लेखा समिति के सभापति रहे।

वर्ष 1971 में कुआलालम्पुर (मलेशिया) में आयोजित राष्ट्रमण्डल संसदीय संघ तथा वर्ष 1984 में जिनेवा गये। भारतीय प्रतिनिधि मण्डल में भी आपने प्रतिनिधित्व किया। आप वर्ष 1994 में राज्य सभा के लिए निर्वाचित हुए और वर्तमान में आप राज्य सभा के सदस्य थे।

प्रारम्भ से ही भारतीय जनसंघ से सम्बद्ध रहे श्री अग्रवालजी ने मलेशिया, नेपाल, अमेरिका, ब्रिटेन और स्वीटजरलैंड की यात्राएं कीं।

श्री अग्रवालजी का आज 10 तारीख को प्रातः निधन हो गया।

मैं दिवंगत श्री अग्रवालजी को अपनी ओर से तथा इस सदन के समस्त माननीय सदस्यों की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे तथा उनके शोक-संतप्त परिवार को उनका बिछोह सहन करने की शक्ति दे।

मैं आप सबसे निवेदन करूंगा कि दो मिनट मौन खड़े रहकर दिवंगत श्री अग्रवाल की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करें।

(तत्पश्चात् सदन ने दो मिनट मौन खड़े रहकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की।)

सदन की कार्यवाही दिनांक 11 सितम्बर, 1997 के प्रातः 11.00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही 11.40 बजे गुरुवार, 11 सितम्बर, 1997 के 11.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई।)